# ✺ 28 अप्रैल 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

## ✺ ज्ञान-

1] तुम कहते हो शिवबाबा हमारा बेटा है, वह बेटा ऐसा है जो कुछ लेता नहीं, सदा ही देता है। भक्ति में कहते हैं जो जैसा कर्म करता है वैसा फल पाता है। परन्तु भक्ति में तो अल्पकाल का मिलता। ज्ञान में समझ से करते इसलिए सदाकाल का मिलता है।

2] बाप कहते हैं मुझे बहुत भटकाया है। परमात्मा को ठिक्कर-भित्तर सबमें कह दिया है। जैसे भक्ति मार्ग में खुद भटके हैं वैसे मुझे भी भटकाया है। ड्रामा अनुसार उनके बात करने का ढंग कितना शीतल है। समझाते हैं मेरे ऊपर सबने कितना अपकार किया है, मेरी कितगी ग्लानी की है।

3] राम राज्य और रावण राज्य दोनों बेहद है। दोनों का टाइम बराबर है। इस समय भोगी होने कारण दुनिया की वृद्धि जास्ती होती है, आयु भी कम होती है। वृद्धि जास्ती न हो उसके लिये फिर प्रबन्ध रचते हैं। तुम बच्चे जानते हो इतनी बड़ी दुनिया को कम करना तो बाप का ही काम है। बाप आते ही हैं कम करने।

4] फिर यह भी कह देते कि चिड़ियाओं ने सागर को हप किया। तुम चिड़ियायें हो, सारे ज्ञान सागर को हप कर रही हो।

5] कोई जानते नहीं कि राम को बाण क्यों दिया है ? मारामारी की हिस्ट्री बना दी है। इस समय है ही मारामारी। तुम जानते हो जो जैसा कर्म करते हैं उनको ऐसा फल मिलता है।

6] इस समय सबके ऊपर दु:खों के पहाड़ गिरने हैं। खूने नाहेक खेल दिखाते हैं और गोवर्धन पहाड़ भी दिखाते हैं। अंगुली से पहाड़ उठाया। तुम इसका अर्थ जानते हो। तुम थोड़े से बच्चे इस दु:खों के पहाड़ को हटाते हो। दु:ख भी सहन करते हो।

7] बाप कहते हैं मनुष्य, मनुष्य ही बनता है, जानवर आदि नहीं बनता। पढ़ाई में कोई अन्धश्रद्धा की बात नहीं होती। तुम्हारी यह पढ़ाई है। स्टूडेन्ट पढ़कर पास होकर कमाते हैं।

8] इस अलौकिक जीवन में आत्मा और प्रकृति दोनों की तन्दरूस्ती आवश्यक है। जब आत्मा स्वस्थ्य है तो तन का हिसाब-किताब वा तन का रोग सूली से कांटा बनने के कारण, स्व-स्थिति के कारण स्वस्थ्य अनुभव करते हैं। उनके मुख पर चेहरे पर बीमारी के कष्ट के चिन्ह नहीं रहते।

## ✺ योग-

1] रूहानी बच्चों से रूहानी बाप रूहारिहान कर रहे हैं वा ऐसे कहेंगे रूहानी बाप बच्चों को राजयोग सिखला रहे हैं। तुम आये हो बेहद के बाप से राजयोग सीखने इसलिये बुद्धि चली जानी चाहिए बाप की तरफ।

2] सवेरे याद में बैठते हो, वह है ड्रिल। आत्मा को अपने बाप को याद करना है। योग अक्षर छोड़ दो। इसमें मूँझते हैं। कहते हैं हमारा योग नहीं लगता है। बाप कहते हैं– अरे, बाप को तुम याद नहीं कर सकते हो ! क्या यह अच्छी बात हैं ! याद नहीं करेंगे तो पावन कैसे बनेंगे ?

## ✺ धारणा-

1] अगर यहाँ से जाकर पतित बनें तो धारणा नहीं होगी। यह हुआ अपने आपको श्रापित करना। विकार है ही रावण की मत। राम की मत छोड़ रावण की मत से विकारी बन पत्थर बन पड़ते है।

## ✺ सेवा-

1] वशीकरण मन्त्र सबको देना है। पढ़ाई की मेहनत से राजाई का तिलक लेना है। इन दु:खों के पहाड़ को हटाने में अपनी अंगुली देनी है।

2] दिल से, तन से, आपसी प्यार से सेवा करो तो सफलता निश्चित मिलेगी।